वेरीकोज वेन्स

Dr Sandeep Kumar
MS FRCS(Edinburgh) PhD(Wales) MMSc(Newcastle)
Counsultant Surgeon,Scientist & Epidemiologist
Professor of Surgery Ex, King Georges Medical University
Founder Director AIIMS Bhopal
E: profsandeepsurgeon@gmail.com
W: www.surgeoninlucknow.com
M: 09335240880

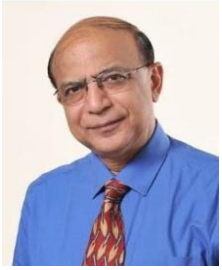

शरीर के विविध अंगों से हृदय तक रुधिर ले जानेवाली वाहिनियों के फूल जाने और टेढ़ी-मेढ़ी हो जाने को **अपस्फीत शिरा** (वैरिकोज वेन्स) कहते हैं। पैरों की नसों में मौजूद वाल्व, पैरों के रक्त को नीचे से ऊपर ह्दय की ओर ले जाने में मदद करते है, पर इन वाल्व के खराब होने पर रक्त ऊपर की ओर वापस सही तरीके से नहीं चढ़ पाता है और पैरों में जमा व रिसता रहता है। इसमें पैरों की नसें कमजोर होकर फैलने लगती है या फिर सप्रिंग की तरह मुड़– सिकुड़ जाती हैं। इसे वेरीकोज वेन्स कहते है। इसकी वजह से पैरों की नसों में रक्तचाप बढ़ जाता है। अतः इसे वीनस हाईपरटेंशन या *venous insufficiency* भी कहते हैं।

इस रोग का कारण यह है : शिराएँ ऊतकों से रक्त को हृदय की ओर ले जाती हैं। शिराओं को गुरुत्वाकर्षण के विपरीत रक्त को टाँगों से हृदय में ले जाना पड़ता है। ऊपर की ओर के इस प्रवाह की सहायता करने के लिए शिराओं के भीतर कितनी ही कपाटिकाएँ (or valves) बनी हुई हैं। कपाटिकाएँ रक्त को केवल ऊपर की ही ओर जाने देती हैं। जब कपाटिकाएँ दुर्बल हो जाती हैं, या कहीं.कहीं नहीं होतींए तो रक्त भली भाँति ऊपर को चढ़ नहीं पाता और कभी.कभी नीचे की ओर बहने लगता है। ऐसी दशा में शिराएँ फूल जाती हैं और लंबाई बढ़ जाने से टेढ़ी.मेढ़ी भी हो जाती हैं। ये ही अपस्फीत शिराएँ (or varicose veins) कहलाती हैं। यह एक हजार में 5–10 लोगों को प्रभावित करती हैं।

लक्षण एवं जांचः इसकी वजह से पैरों में हल्का दर्द, थकान, भारीपन सूजन, खुजली, धब्बेदार त्वचा, पैरों में घाव या (ulcer) पैरों की त्वचा मोटी हो जाती है। वेरीकोज वेन्स का इलाज सामान्यतः तब शुरू किया जा सकता है, जब यह पक्का हो जाये कि पैरों की अन्दर की सतह की गहरी शिराओं शिराये ठीक से काम कर रही है - इसकी **पहचान** विस्तृत परीक्षण व कलर डॉपलर Colour Doppler test से इसे पहचाना जाता है।

कारण पिडलियो का ढीलापन व उनकी तन्यता कम होना, रक्त में प्रोटीन की मात्रा का बढना, वाहिनियो का ढीला होना व वजन ज्यादा होना इस बीमारी के मुख्य कारण है।

विस्तृत परीक्षण व Doppler test से इसकी पहचाना की जा सकता है।

वेरीकोज वेन्स अवस्थाएं

1. Co इस अवस्था में स्पष्ट शिराओं के रोग का लक्षण पता नहीं चल पाता है।
2. C1 इसमें शिराये जाल की तरह दिखती है।
3. C2, C2A अवस्था में अन्य लक्षण नहीं होते है।
   C2S इस अवस्था में अन्य लक्षण भी होते है।
4. C3 अवस्था में सूजन भी होती है।
5. C4A अवस्था में शिराये बन्द होने के कारण त्वचा में खुजली होती है। व धब्बे पड़ने लगते है।
   C4B शिराये खराब होने के कारण त्वचा में आंतरिक परिवर्तन भी होने लगते है।
6. C5 इस अवस्था में घाव हो जाते है।
7. C6 त्वचा में लगातार घाव बनने लगते है।

वेरिकोज एक्जिमा इसमें त्वचा का रंग लाल, त्वचा रूखी व परतदार तथा दर्दीली हो जाती है।
वेरिकोज अल्सर घाव हो जाते है जो जल्दी व आसानी से ठीक नहीं हो पाते है।
Lipodermatosclerosis इससे भी अधिक गंभीर व दर्दीली अवस्था है। जिससे उस स्थान की चमड़ी और कड़ी मोटी व परतदार हो जाती है व वहां की त्वचा का रंग बदल जाता है। यह अधिकतर पैर के निचले हिस्से में होती है।

उपचार पैरों को ऊपर उठाकर आराम करने, विशेष इलास्टिक के कसे हुए मोजे, गहरी स्वांस लेना व व्यायाम रोग के उपचार में सहायक है। खाने वाली दवायें प्रायः इस बीमारी में अधिक सफल नहीं हैं। इसके उपचार में आमतौर पर अस्पताल में रहने की आवश्यकता नहीं होती इलाज सामान्यतः ओ0पी0डी0 में ही हो जाता है।

1 स्ट्रिपिंग, Ligation इसमें एनेस्थिीसिया देकर शल्य चिकित्सक बीमार शिराओं को निकाल देता है। प्रभावित नसों को स्ट्रीपिंग, शल्य चिकित्सा द्वारा निकाल देना एक परम्परागत उपचार है। इसकी सफलता की दर अधिकतम है।

2 स्केलरोथेरेपी एक विशेष रसायन/फोम का इंजेक्शन है जो कि लीक कर रही नसों को बन्द कर देता है। बहुत सी नसें इलाज के पहले चरण में ठीक हो जाती है। यह अत्यन्त कारगर है जो कि 100 में 85 लोगों में अच्छे परिणाम देता है। यह एक अत्यन्त कारगर तरीका है।

3 लेजर उपचार रेडियो फ्रिक्वेंशी अबलेशन(RFA)एडोवेनस लेजर उपचार में रोगी को एनेस्थिीसिया देकर, अल्ट्रासाउण्ड से स्कैन कर पैर की नस में पतली टयूब डाली जाती है। और जब यह सही जगह पर आ जाती है तो लेजर (radio frequency waves) की बौछार कर उन नसों को गर्म करने में किया जाता है। ताकि नसें बन्द हो सके। जिससे रक्त का रिसाव रूक जाये।

तीनों उपचारों का उद्देश्य एक ही है, कि रक्त का रिसाव बन्द कर दिया जाये। रक्त यदि रीसे नहीं और गहरे श्वसन से आप इसे ऊपर हृदय की ओर खींचते रहें तो इस समस्या के लक्षण बहुत कम हो जाते है।